आभारोक्ति

प्रेरणा का श्रोत ज्ञान का स्थायी आधार होता है. मनुष्य जब किसी उज्जवल पथ की ओर कदम बढ़ाता है तो उसे सम्पन्न करने के लिये अंत: करणीय प्रेरणा यथोचित मार्ग दर्शन एवं सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता होती है, और इसकी महत्ता को इस प्रकार व्यक्त की जा सकती है कि जिस प्रकार मानव अस्तित्व के लिये वायु आवश्यक होती है, उसी प्रकार शिक्षा ग्रहण एवं शोध कार्य के लिये सक्रिय सहयोग एवं मार्ग दर्शन की आवश्यकता होती है.

ज्ञान पिपासा तथा शोध प्रबंध की ओर परोक्ष रूप से मेरा प्रथम साक्षात्कार होने पर जिस रूप में बन पड़ा उसे विनम्र पूर्वक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ. इस प्रयास में जहाँ कहीं भी अल्पज्ञता के प्रभाव की छाप परिलक्षित हो वही मेरी वास्तविक योग्यता है.

इतिहास कार टायनवी ने इतिहास को "काल पुरूषों का देवालय" बताते हुये कहा है कि कुछ नाम ऐसे होते हैं, जो लोगों की नजर में किसी गुण विशेष के प्रतीक बन जाते हैं. इतिहास का देवालय इन्हीं शिल्पित पाषाण मूर्तियों से सुसज्जित हैं, अशिल्पित पत्थरों के ढेर से नहीं.

देश ने जिन प्रखर स्वाधीनता सेनानियों और समाज निष्ठ साधकों को जन्म दिया है उनमें छत्तीसगढ़ का नाम भी गौरव पूर्वक लिया जाता है, इन सेनानियों ने न सिर्फ स्वाधीनता के महासागर में, बल्कि स्वलंत्र भारत में देश के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिदृष्य को उन्होंने निर्णायक ढंग से प्रभावित करने में सफलता पायी है.

दर्शन में दो शब्द प्रयुक्त होते हैं, अम्युदय और नि:श्रेयम्। एक का अर्थ है कर्तव्य और उत्तरदायित्व पूर्ण सेवा परायणता की उत्तरोत्तर प्रगति. और दूसरे का अर्थ है कर्मबंधनों का शैथिल्य अथवा मुक्ति। किसी भी व्यक्ति के अभ्युदय की कसौटी हमारे यहाँ इस प्रकार निर्धारित की गयी है।

"विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुतायुधि विक्रमः
यशसि चाभिरूचिर्व्यसनं श्रुतो, प्रकृति सिद्धि भिर्दहि महत्मनाम।

व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना बड़ा ही कठिन कार्य होता है. मूल्यांकन करने वाले के दृष्टिकोण एवं उन व्यक्तियों में सामंजस्य कदाचित ही उत्पन्न हो जाता है और अपने तराजू में दूसरे को तौलना तभी सही होता है, जबकि बाट प्रमाणिक हो, परन्तु व्यक्तित्व को तौलने के लिये अभी तक मनोविज्ञान ने किसी प्रकार के बाटों का अविष्कार नहीं किया है.

व्यक्तियों के जीवन में अनेक तत्वों का सम्मिश्रण रहता है, विभिन्न तत्व परिस्थितियों के बल पाकर घटते बढ़ते रहते हैं, उसमें साम्य बिन्दु का पता लगाना स्वयं में एक चुनौती है। और फिर किसी एक व्यक्ति के बारे में ही पता लगाना या अनुसंधान करना नहीं है, अपितु पूरे छत्तीसगढ़ के ब्राह्मण सेनानी का या किसी एक सम्प्रदाय जाति का अलग अलग जगहों में जाकर खोज करना स्वयं में एक बहुत बड़ी चुनौती है, अब जबकि उन सेनानियों में से नाम मात्र ही बच गये हैं, जिनकी याददाश्त भी वृद्धावस्था के कारण व घर परिवार की जिम्मेदारियों के कारण शिथिल हो चुकी है.

मेरा इस विषय पर अनुसंधान करने का प्रमुख कारण मेरे पिताजी पं0 शिव कुमार पाठक जी हैं, जिन्होंने हम भाई–बहनों को बाल्यावस्था में ही आजादी के पूर्व की घटनाओं के बारे में सेनानियों के दुःसाहस के बारे में परिचय कराते रहते थे. मेरे पिताजी जो स्वयं एक स्वातंत्र्य सेनानी रहे, जिन्होंने अंग्रेजों के अत्याचार सहे, लाठियाँ झेली, परन्तु उन्होंने अपना नाम सिर्फ इसलिये सेनानियों की लिस्ट में नहीं लिखाई कि वे भारत माता की आजादी के लिये संघर्ष करना अपना कर्तव्य समझते थे, उसके लिये सरकार से पदवी लेना, पेंशन लेना, अपनी मातृभूमि का अपमान समझते थे, वे जिन्दगी भर खेती करके अपने व अपने परिवार का पेट पालने में लगे रहे और हमें भी यही सीख दिया, यहाँ तक कि उन्होंने हम भाई–बहनों का नाम भी आजादी मिलने की घटना की तरह क्रम वार किया, जैसे क्रांति, विजय, जय, धर्म, सूर्य, प्रकाश व शुभ, दिनकर राज, प्रसन्न। वे जिन्दगी भर दुख झेलकर हम भाई बहनों को उच्च शिक्षा

के लिये प्रेरित करते रहे जैसे ही उन्हें लगा कि अब इनके प्रति मेरा उत्तरदायित्व समाप्त हो गया है तो उन्होंने अपने शरीर का त्याग कर दिया, 11 जनवरी 1997 को भोर होने के पूर्व ही वे हम सभी को छोड़कर निर्वाण में लीन हो गये, उन्होंने कुछ पत्रिका का संपादन भी किया था उसमें से मुख्य थे।

वे तखतपुर कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी भी रहे, सदस्य व अध्यक्ष भी निर्वाचित हुये कई वर्षों तक अपने जन्म ग्राम घुटकू में सरपंच के पद पर रहकर जनता की सेवा की.

वैसे कालेज के प्रथम वर्ष से ही इतिहास मेरा विषय रहा है, और यह मुझे अत्यधिक प्रिय भी रहा है, आगे चलकर इस विषय के बारे में अत्यधिक जानने की उत्सुकता ने ही मुझे इस शोध कार्य को पूर्ण करने में सक्षम बनाया. इसमें मेरे पिताजी का सहयोग हर कदम पर रहा है, मेरा यह शोध ग्रंथ उनके ही चरणों पर अर्पित होगा यही मेरा उनके प्रति आभार है.

मेरी गुरूजन डॉ0 प्रदीप शुक्ल जी ने मेरें विषय चयन पर मेरी मदद की, सर्वप्रथम शोध करने से पूर्व मेरे मानस पटल पर इतने शीर्षक थे कि मैं किस विषय पर कार्य करूं यही सोचकर मैं कुछ दिन विचलित रही, पर उनके द्वारा विषय चयन पर मेरे लिये काफी कुछ सहज हो गया वे समय समय पर मेरे लिये पुस्तक आदि द्वारा मदद करते रहे तथा परोक्ष व अपरोक्ष रूप से वे मेरी मदद करते रहे, इसके लिये मैं उनकी आभारी हूँ. गुरूदेव के लिये आभार में इतना ही कहना चाहूंगी कि --

गुरू: ब्रह्मा, गुरू: विष्णु, गुरू: देवो महेश्वर:।
गुरू: साक्षात् परं ब्रह्म, तस्मै श्री गुरूववे नम:।।

जिस तरह विश्व वेदनीय स्वामी विवेकानन्द ने प्रात: काल स्मरणीय रामकृष्ण परमहंस के लिये कृतज्ञता ज्ञापित करते हुये कहा है कि अपने संपूर्ण जीवन में जहाँ कहीं भी मेरा प्रयास सफल हो पाया है वो सब गुरू की कृपा का फल है और जहाँ अल्पज्ञान और मिथ्याभिमान की छाया दिखाई दे वही मेरी वास्तविक योग्यता है.

अतः यही मेरा अपने गुरूजन के प्रति भाव है.

मेरे इस शोध प्रबंध में वैसे तो मेरे सभी भाई बहनों का सहयोग पूरा रहा है, परन्तु मेरे दो भाईयों ने मुझे विशेष सहयोग दिया है। जिनमें मेरे भाई श्री धर्म प्रकाश पाठक ने समय समय पर पुस्तकों आदि की व्यवस्था करके मेरी मदद की है, उसी तरह भाई सूर्य प्रकाश पाठक ने अपने प्राची प्रिंटर्स के माध्यम से छपाई कार्य में मेरी मदद प्रारंभ से इति तक किया है. मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ.

साथ ही मैं अपने पति श्री पंकज शर्मा की भी आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे पठन–पाठन के लिये अतिरिक्त समय दिया तथा स्वयं भी सहयोग देकर इस कार्य को पूर्ण करवाने में मेरी मदद की है.

इस प्रकार किसी भी कार्य को पूर्ण कर प्रकाश में लाने का कार्य बहुत ही कठिन है, परन्तु प्रेरणा का श्रोत ज्ञान का स्थायी आधार होता है, मनुष्य जब किसी उज्जवल पथ की ओर कदम बढ़ाता है तो उसे यथोचित मार्गदर्शन एवं सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता होती है.

इस तरह से इसकी महत्ता को इस प्रकार व्यक्त की जा सकती है कि जिस प्रकार मानव अस्तित्व के लिये वायु की आवश्यकता होती है, इसी प्रकार शोध कार्य के लिये सक्रिय सहयोग व मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है.

मैं उन सभी की भी हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने परोक्ष व अपरोक्ष रूप से मेरा सहयोग दिया है.